Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका १: २६-३८

खुदाई : मरियम के लिए दूत जिब्राईल के शब्द जैसे लूका १: १३-१७ में जकर्याह से जो कहे गए थे उनसे तुलना करते है? लूका १:३४ और ३८ में मरियम, लूका १:१२ और १८ में जकर्याह की तुलना में अलग-अलग प्रतिक्रिया कैसे देती है? यहां यीशु के बारे में किस सच्चाई पर जोर दिया जाता है? मसीहा को जन्म देने के सम्मान के साथ स्वाभाविक रूप से कौन सी अपेक्षाएं होंगी? इलीशिबा की गर्भावस्था ने मरियम को कैसे प्रोत्साहित किया?

प्रतिबिंबित: क्या आपको लगता है कि प्रभु को संदेह और डर लगता है? आखिरी बार कब आप डरे थे परन्तु विश्वास करते थे? वह आपके डर के समय में आप से कैसे मिला? आपके जीवन के किस क्षेत्र में आपको विश्वास करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के साथ कुछ भी असंभव नहीं है? आपको इस पर विश्वास करने से क्या रोकता है? मरियम से विश्वास के बारे में आप क्या सीखते हैं? विश्वास की महिलाएं कौन हैं जिन्हें आप अपनी भूमिका मॉडल मानते हैं? क्या उनमें से कोई आपसे छोटी है? क्या उनमें से कोई किशोर हैं? जब आप यीशु के नाम को सुनते या बोलते हैं तो दूसरा शब्द क्या आप के मन में आता है? सतह पर क्या भाव या भावनाएं बुलबुला होती हैं? वह आपकी आत्मा में क्या तहलका करता है?



यह सबसे उपयुक्त लगता है कि सुसमाचार मन्दिर के भीतर

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 2

और बलिदान के समय की शुरुआत होगी। मंदिर में जकर्याह के प्रकाशन के बाद छह महीने बीत चुके थे। यह दृश्य अब यरूशलेम के मंदिर से गलील के एक शहर में स्थानांतरित हो गया है, पूर्वज से मसीहा तक, आम पुजारी से मरियम नाम की एक छोटी लड़की के आम परिवार के लिए जो नासरत में रहता था। मरियम, ज़ाहिर है, उसका असली हिब्रू नाम मिर्याम का एक अंग्रेज़ी का रूप है। ग्रीक पाठ हिब्रू नाम को दर्शाता है। इसका अनुवाद हिब्रू से ग्रीक तक, लैटिन मारिया तक और अंत में अंग्रेजी में मैरी किया गया था। वह नाम जो उसने जवाब दिया होगा मिर्याम था

जिन द्वीपों में फिलिस्तीन का केंद्रीय हिस्सा बनता है वे चौड़ाई से टूट जाते हैं, जो जेज्रील का समृद्ध मैदान है, जो शेष भूमि से गलील को पृथक करता है। यह हमेशा इस्राइल का महान युद्धक्षेत्र रहा था। यह दो पर्वतीय दीवारों के बीच बंद दिखाई देता है। निचले गलील के पहाड़ उत्तर की दीवार बनाते हैं, और उस सीमा के बीच में विशाल जेज्रील घाटी को देखकर थोडी निराशा होती है। यह परमेश्वर के अपने मंदिरों में से एक प्रतीत होता था। पंद्रह पहाड़ी इसके चारों ओर गुलाब की तरह, सबसे अधिक ५०० फीट होने के नाते यह एक रंगभूमि के रूप में है। अपने निचले ढलान से नासरत के छोटे शहर को घेरा हुआ था, इसकी संकीर्ण गलियों को बरामदों की तरह व्यवस्थित किया गया था।

मिर्याम हिब्रू शब्द से कड़वा के लिए लिया गया है। नाज़रथ शहर में पैदा हुई और पली-बढ़ी, वह एक औसत परिवार की बच्ची थी। वह गलियों में खेली, जैसा कि अन्य बच्चे करते थे, और वह माता-पिता के अनुशासन के अधीन थी। यूसुफ उसे जानता था, भले ही वह उससे बड़ा था, शायद अठारह से बीस के आसपास का होगा। नासरत के सभी घर एक ही मोहल्ले में थे क्योंकि यह लगभग दो सौ लोगों का एक छोटा सा शहर था। एक पिता के लिए नासरत में होने वाली सबसे बड़ी घटना जो घटने वाली थी, के लिए अपने बच्चों को पास के ग्रीक शहर सेफोरिस में खरीदारी करने के लिए ले जा रहा था। लोग अपने दैनिक जीवन में बारीकी से बुनाई कर रहे थे, और सुबह सुबह गांव में महिलाएं मिलती रहती थीं।

पहली शताब्दी के फिलिस्तीन के यहूदियों ने शादी में दो परिवारों को शामिल होते देखा। और क्योंकि सिद्धांत इतने ऊंचे थे, उन्होंने कभी भी किशोर भावनाओं की सनक के लिए इतना महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लिया होगा। इसलिए माता-पिता ने अपने बेटों और बेटियों के विवाह की व्यवस्था की। जबकि बच्चों को इस मामले में कोई अंतिम शब्द नहीं दिया गया था, उनकी निजी इच्छाओं को आम तौर पर ध्यान में रखा जाता था। जब मरियम अपने तेरहवें जन्मदिन तक पहुंची, आमतौर पर जब वह युवावस्था तक पहुंची, तो शादी के लिए उसका हाथ मांगने की अनुमति थी। उचित रूप का पालन किया गया: यूसुफ ने पहले अपने माता-पिता से पूछा कि क्या वह उससे शादी कर सकता है। वह पड़ोस में एक विनम्र प्रशिक्षु बढ़ई था, शायद उसे अपनी खुद की दुकान खोलने के लिए एक वर्ष के समय की और आवश्यकता थी। युवा पुरुषों से तेरह वर्ष की उम्र में वयस्क जिम्मेदारियां उठाने की उम्मीद की जाती थी, इसलिए उसकी इस उम्र में वह पहले से ही वह अपने विवाह के लिए कुछ पैसे बचा चुका था।

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 3

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यूसुफ के माता-पिता ने शादी के मामले पर चर्चा की और समय पर, मरियम के माता-पिता पर एक औपचारिक बुलावे का भुगतान किया, जैसा कि रिवाज था। पूरे पड़ोस को पहले से पता था कि क्या बातचीत चल रही थी, एक सजे हुए दरवाजे से दुसरे सजे हुए द्वार तक, महिलाओं ने इस पर चर्चा की क्योंकि उन्होंने अपने घरों के सामने पत्थरों पर अपने कपड़े धोए थे। मरियम को इस मामले के बारे में पता नहीं था, लेकिन निश्चित रूप से उसने अपनी मां और पिता को अपनी इच्छाओं के बारे में जाना होगा।

यहूदी शादी समारोह चार अलग भागों में बाँट दिया जाता था, जिनमें से दो आधुनिक यहूदी शादी में अभी भी मनाये जाते हैं। माता-पिता आमतौर पर अपनी दिखावटी बात-चीत में लगे होते हैं। एक बार जब वे सहमत हो गए, शिद्दुखिन नामक पहला चरण, जिसका मतलब है, व्यवस्था पूरी हुई। आम तौर पर आम परिवार के लिए दो परिवारों के एक परिवार होने की उम्मीद के साथ, यह बहुत कम उम्र में होता है। अगर उन्हें उचित जोड़ा बनाने में कुछ परेशानी होती है, तो परिवार शिद्दुखिन या जोड़ा बनाने वाली सेवाओं को प्राप्त कर सकते हैं, जब एक सफल जोड़ा बन जाता था, तो यह आवश्यक था, जैसा कि दस्तूर था, दहेज की बात की जाती थी, लेकिन मरियम के परिवार में ऐसा कुछ नहीं हुआl उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर नहीं थी, यूसुफ की तुलना में बुरी भी नहीं थी। जब तक घर का आदमी अच्छा स्वास्थ्य में रहेगा, तब तक वे भूखे नहीं रहेंगे, और यूसुफ एक स्वस्थ युवा बढ़ई था।

जैसे जैसे वक़्त गुजरा, वहां एक कठिनाई आगई जब जोड़े ने विवाहित होने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की। यह एरुसिन) अरुसिंन हिब्रू सब्द) जो सगाई के रूप में भी जाना जाता है, और या शादी का पहला भाग भी कहलाता हैl सगाई की हमारी आधुनिक समझ नए वाचा के समय के लोगों के लिए अपना अर्थ पूरी तरह से कब्जा नहीं करती है। आज के दौर में, एक सगाई हुआ जोड़ा किसी कानूनी असर के साथ अपनी प्रतिबद्धता को तोड़ सकता है, लेकिन पहली शताब्दी में सगाई हुए एक जोड़े को एक मजबूत समझौते के साथ बंधे हुए रहना पड़ता था। इस सगाई (अरिसिंन) अवधि में प्रवेश करने के लिए, जोड़े को एक सार्वजनिक समारोह, एक हूपा या मंडप, के तहत करना होता था, और एक केतुबा नामक एक लिखित अनुबंध पर हस्ताक्षर करने होते थे। इस दस्तावेज़ में, दोनों पक्ष इस बात को निर्धारित करते थे कि वे इस नए परिवार को बनाने के लिए क्या सहमत थे। इस खूबसूरत समारोह को खत्म करने के बाद, दुल्हन अपने दहेज की तैयारी करेगी कि वह उसे शादी में लाएगी, जबकि दूल्हा अक्सर अपने पिता के घर पर कमरे के अतिरिक्त, जोड़े के भविष्य के लिए एक घर तैयार करेगा (यूहन्ना १४:१-३)l

जब केतुबा पर हस्ताक्षर किए गए, तो समारोह का पहला जयपात्र (कप) आशीर्वादित किया गया, इस प्रकार सार्वजनिक रूप से उनके ईमानदार इरादों को घोषित किया गया। यह एक औपचारिक एक साल के लिए सगाई है, और किसी भी और बंधन से अधिक बाध्यकारी है। यह शादी की अन्तिम स्थिति थी। एक बार जब शादी अनुबंध पर बातचीत हो गई, भले ही विवाह समारोह नहीं हुआ था, तलाक के माध्यम से दूल्हे को अपने मंगेतर से व्यवस्थाविवरण

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 4

२४: १-४ में तलाक के लिए आवश्यकताओं के आधार पर छुटकारा नहीं मिल सकता था। जोड़े को तलाक़ प्राप्त करने के लिए एक सेफ़रिटिट प्राप्त करने के लिए बाध्य किया जाता था, जिसका अर्थ था तलाक के लिए इब्रानी विधेयक, इस प्रक्रिया के लिए रूढ़िवादी यहूदी कानून में आज भी एक प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में, युगल चरण में प्रवेश करने वाले एक जोड़े थे, असल में, उन्हें पूरी तरह से विवाहित माना जाता था, हालांकि वे अभी तक एक साथ नहीं रह रहे थे। यहूदिय में सगाई में, जोड़े को कानूनी यौन संबंधों के लिए हक भी हासिल था, भले ही प्रत्येक पक्ष अपने माता-पिता के साथ घर पर रह रहा था। तथापि, गलील देश में, लोगों ने पांच सौ साल पहले उस विशेषाधिकार को त्याग दिया था, और अंतिम विवाह की शपथ के माध्यम से शुद्धता बनाए रखी गई थी।

फिर भी, अगर यूसुफ की सगाई और विवाह के बीच मृत्यु हो जाती, तो मरियम उसकी कानूनी विधवा होती। अगर, इसी अवधि में कोई और आदमी उसके साथ यौन संबंध रखता, तो मरियम को एक व्यभिचारिन के रूप में दंडित किया जाता। प्रतीक्षा समय बिताया गया था, रीति-रिवाज के अनुसार, दूल्हे को उनके रहने के लिए एक जगह तैयार करनी थी। जब सगाई के बाद एक साल का समय खत्म हो गया, तो शादी होगी।

आखिरकार दूसरा चरण आएगा, और यह दुल्हन के लिए मनोहर के रूप में जाना जाता था। उस समय दूल्हे का पिता शॉफर या मेंढे के सींग को बजाएंगे/फूकेंगे। वे निर्धारित करेंगे कि कब मेंढे के सींग को बजाना होगा (देखें Jw – दस सुकन्या के दृष्टांत)। तब दूल्हा अपनी दुल्हन को लेने के लिए निकलेगा, और वह सचमुच उसे अपने घर वापस (हिब्रू रूट नासा का अर्थ, जहां से निसुइन शब्द आता है) समारोह की जगह ले जाएगाl

फिर तीसरा चरण आया, जो विवाह समारोह था, और उसमें केवल कुछ ही लोग आमंत्रित किए गए थे। यह सफाई के लिए एक अनुष्ठान विसर्जन से पहले था। एक बार फिर, हूपा या मंडप के नीचे, यह जोड़ा पूर्ण विवाह के आशीर्वाद में प्रवेश करने के अपने इरादे की पुष्टि करेगा। यह शराब के दूसरे कप के रूप में किया गया था सुंदर शेवा ब’राखोत (जो बिर्कोट निस्सुएँ के नाम से भी जाना जाता है), या सात आशीर्वाद के साथ आशीर्वाद दिया गया था।

निसुइन समारोह के इस भाग के बाद, परिवार और मेहमानों को चौथे चरण, या शादी की दावत में आमंत्रित किया जाएगा। वे अपनी शादी का जश्न एक आनंदमय दावत के साथ मनाएंगे जो सात दिनों तक चलेगी। समारोह में आमंत्रित नहीं किए गए कई अन्य लोगों को दावत में आमंत्रित किया गया था। शादी की दावत के बाद नवविवाहित जोड़े दूल्हे द्वारा तैयार जगह पर एक साथ रहेंगे।

यहूदी विवाह समारोह की समानता यीशु मसीह के रिश्ते को उसकी दुल्हन को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, कलीसिया (प्रकाशितवाक्य Fz पर मेरी टिप्पणी देखें – धन्य हैं वे जो मेमने के विवाह के भोज में आमंत्रित हैं)। तनख और नए वाचा दोनों में कई बार, विवाह और विश्वासियों और परमेश्वर के बीच संबंधों के बीच समानताएं खींची जाती

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 5

हैं। होशे और सुलैमान के गीत दोनों में प्रेम कहानियां उस तथ्य को इंगित करती हैं। दिलचस्प बात यह है कि, यीशु और रब्बी शाऊल दोनों में २ कुरिन्थियों ११: २ और इफिसियों १: ३-६ में शिद्दुखिन जैसे वैवाहिक शब्दों का उल्लेख है, यूहन्ना १४:१-४ में सगाई, और २ थिस्सलुनिकियों ४:१३-१८ में पवित्र बंधन के लिए आशीषों जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। यह सुनिश्चित करने के लिए, समारोह के ब्योरे के बारे में कई रोमांचक सच्चाइयों को चित्रित किया गया है कि यहोवा कैसे यीशु के अनुयायियों को देखता है, जिस दूलेह को पिता ने भेजा है।

यह यीशु के जन्म के लिए संदर्भ है। हमें बताया जाता है कि मरियम को विवाहित होने का वचन दिया गया था, जिसका अर्थ है कि यह जोड़ा समारोह के दूसरे चरण में प्रवेश कर चुका था। सगाई के दौरान, मरियम, ज़ाहिर है, अपने माता-पिता के साथ रह रही थी और उनके लिए निर्धारित दैनिक काम को वः पूरा करती थी। इलीशिबा की गर्भावस्था के छठे महीने में, परमेश्वर ने जिब्राईल स्वर्गदूत को गालील के एक नगर नासरत में (लूका १:२६), राजा दाऊद के वंशज यूसुफ नाम के एक आदमी से शादी करने के लिए वचनबद्ध एक कुंवारी के लिए भेजा।

मरियम ने अभी तक किसी आदमी के साथ यौन संपर्क नहीं किया था, लूका ने यूनानी शब्द का उपयोग करके उसे एक कुंवारी कहा है, जिसके अर्थ की कोई दूसरी संज्ञा नहीं है। कुंवारी का नाम मरियम था और वह शायद तेरह वर्ष की थी (लूका १:२७)। यहां दो बार उसे कुंवारी कहा गया है। यह यह याद रखना चाहिए कि लूका एक वैध था, और वह कुंवारी से जन्म का सबसे विस्तृत विवरण देता है।

सगाई और औपचारिक विवाह के बीच में एक समय में,
मरियम अकेली थी और दूत जिब्राइल उसके पास आया, वह उसके पास गया और कहा: अभिनंदन, आप को बहुत पसंद किया गया है! मरियम को कृपा प्राप्त करने के रूप में अनुग्रह देने की शक्ति के साथ नहीं वर्णित किया गया हैl उसे इस कार्य के लिए चुना नहीं गया क्योंकि उसके पास इस विशेषाधिकार के लिए जीवन की एक विशेष पवित्रता थी। जिब्राईल के शब्द मरियम के हिस्से पर कोई विशेष योग्यता का सुझाव नहीं देते हैं।

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 6

परमेश्वर तुम्हारे साथ है (लूका १:२८)। उन शब्दों के साथ, मरियन ने अपनी प्रतिष्ठा और अपने सपनों को खो दिया। बहुत वास्तविक संभावना थी कि वह यहूदी समुदाय से अपने बाकी के जीवन के लिए बहिष्कृत की गई होगी। कम से कम शुरुआत में, उसने अपना पति होने के लिए पति-का-विश्वास खो दिया। और उसके माता-पिता का क्या? क्या उन्होंने उसके चमत्कारिक बिना यौन सम्बन्ध के गर्भधारण की उसकी विचित्र कहानी पर विश्वास किया होगा? यह असंभव है कि उसका परिवार इतनी अपमानजनक कहानी के लिए गिर गया। मरियम के उद्देश्यों को गले लगाने के मरियम के फैसले ने कठिनाइयों का हिमस्खलन उस पर आ पड़ा होगा और उसे लुभावनी विशेषाधिकार और अनजान दर्द के एक विचित्र मिश्रण में आकर्षित किया होगा। हमें याद दिलाया जाता है कि इस सब के बावजूद एदोनाय की इच्छा के लिए आत्मसमर्पण करने के लिए उत्सुक दिल से पहले जीवन का महत्व होता है।

सुसमाचार लेखकों ने उन्हें रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा श्रेय दिए गए विशेष खिताबों में से कोई भी श्रेय नहीं दिया। यहां दर्ज दूत के द्वारा दिए गए सरल अभिवादन द्वारा मरियम की पूजा नहीं की जाती है। “मार्ग मरियम,” जो लाखों की दैनिक प्रार्थना है और इसका कोई बाइबिल आधार नहीं है। जितना हम प्रशंसा करते हैं और कुंवारी मरियम का सम्मान करते हैं, हमें उससे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए या किसी भी तरह से उसकी पूजा नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से यह मूर्तिपूजा का दूसरा रूप है। हमारे प्रभु की मां सभी प्रकार से सम्मान के लायक है, लेकिन पुत्र हमारी पूजा के लायक है।

मरियम उसके शब्दों से पूरी तरह उलझन में थी और आश्चर्य हुआ कि यह किस तरह का अभिवादन हो सकता है (लूका १:२९)। वह, एक छोटी सी देश की आम लड़की क्यों कर होगी, सभी महिलाओं से ऊपर आशीषित थी? क्या इसका मतलब था कि वह मरने वाली थी? क्या उसे एक दूर जगह पर ले जाया गया था, शायद, कभी उसकी मां और उसके पिता उसको कभी को देखने पाएंगे कभी नहीं … … और क्या यूसुफ भी?

मरियम ने कुछ भी नहीं कहा। वह शायद दूर देखने की कोशिश कर रही थी, न केवल उसके भय के कारण बल्कि यहूदियों में इसे किसी और की आंखों में आँखें डाल कर सीधा सामना करने के लिए बुरी आदत माना जाता था, लेकिन उसकी आँखें जिब्राईल पर किसी चुंबक की तरह लगी थीं। वह लगभग निश्चित रूप से डर गई होगी, उसकी आँखों के सामने अँधेरा सा छा गया होगा, और उसने फिर से देखने की कोशिश की होगी।

जिब्राईल की घोषणा जकर्याह के समान ही थी। उसकी आवाज़ नरम होगी : डरो मत, मरियम, उसने कहा, क्योंकि तुम परमेश्वर के साथ उसके पक्ष में पाई गई हो। जैसे कि यूहन्ना बप्तिस्मादाता के साथ, जिसका नामकरण एक दूत के द्वारा किया गया था। आप एक पुत्र को गर्भ धारण करेंगी और जन्म देंगी, और आप उसे यीशु नाम दे देंगी, जो उसके वास्तविक नाम का एक अंग्रेज़ी रूप भी है। वह नाम यीशु के अनुकूल भी हो सकता था। हिब्रू नाम यीशु का ग्रीक में ईसस के रूप में, फिर लैटिन में, और फिर यीशु के

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 7

रूप में अंग्रेजी में अनुवाद किया गया था। उसका वास्तविक नाम, यीशु’आ था, एक नाम जिसका अर्थ है, बचाने वाला या उद्धारकर्ता था (लूका १:३०-३१)। जैसा कि यूसुफ को बताया जाएगा, बच्चे का नाम उद्धार होना था क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा (मत्ती १:२१बी)। वह महान होगा और उसे उच्चतम का पुत्र कहा जाएगा (उत्पत्ति १४: १८-२०)। हालांकि यीशु विचार-गोष्ठी जैसे समूह कुंवारी से हुए जन्म को छूट देते हैं, यह अभी भी यहूदी धर्म और मसीही धर्म की मौलिक मान्यताओं में से एक है। वास्तव में, मसीह के ईश्वरत्व होने से इंकार करने के लिए एक पंथ को पहचानने का यह सबसे आसान तरीका है।

दाऊद के साथ एदोनाय की वाचा ने तीन शाश्वत चीजों का वादा किया था। प्रथम, यह एक शाश्वत सिंहासन का वादा किया गया था। प्रभु, परमेश्वर स्वयं, उसे अपने पूर्वज दाऊद का सिंहासन देगा। यह २ शमूएल ७:१२-१३ में राजा दाऊद से मसीहा के लिए वादा किया गया था। दूसरे, उसने एक शाश्वत घर का वादा किया, और वह हमेशा के लिए याकूब के घराने पर शासन करेगा। और तीसरा, उसने एक शाश्वत राज्य का वादा किया, उसका राज्य कभी खत्म नहीं होगा (लूका १:३२-३३)। परमेश्वर ने दाऊद से वही तीन वादे किए: आपका घर और आपका राज्य मेरे सामने हमेशा के लिए बना रहेगा; आपका सिंहासन हमेशा के लिए स्थापित किया जाएगा (२ शमूएल ७:१६)। तनख में दो आवश्यकताओं में से दूसरे की पूर्ति यहां दी गई है: दिव्य नियुक्ति। जब जिब्राईल ने कहा: प्रभु, परमेश्वर स्वयं, उसे उसके पूर्वजों दाऊद का सिंहासन देगा, यीशु को दिव्य नियुक्ति मिली। वह अकेला ही है जिसने तनख़ की दोनों स्थितियों को पूरा किया (देखें Ai – यूसुफ और मरियम की वंशावली)। चूंकि वह, अपने पुनरुत्थान के आधार पर, अब हमेशा के लिए जीवित है, उसका कोई पूर्वजों नहीं हो सकता है।

यीशु हमेशा के लिए दाऊद के सिंहासन पर शासन करेगा। यह भविष्यवाणी शवुओत (पिन्तेकुस्त) के दिन प्रेरितों के कार्य में पतरस के उपदेश में पूरी हुई। उन्होंने भजन १६ का उदाहरण दिया जब उसने कहा: इसी कारण मेरा मन आनंदित हुआ, और मेरी जीभ मग्न हुई; वरन मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगाl क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा (प्रेरितों के कार्य २:२६-२७)l पतरस यह बताने के लिए चला गया कि भले ही दाऊद ने उस भजन को लिखा, वह खुद का जिक्र नहीं कर रहा था क्योंकि दाऊद की क़बर आज भी हमारे साथ है। यह दाऊद ने अपने बड़े पुत्र, मसीहा के बारे में एक भविष्यवाणी की थी, जो हमेशा के लिए स्वर्ग में पिता के सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए पुनरुत्थान किया जाएगा (प्रेरितों के कार्य २:३४)।

मालूम होता है, जिब्राईल के शब्दों ने मरियम को शांत नहीं किया था। उसका दिमाग घूम रहा था। अनिश्च्त रूप से, वह समझ गई थी कि वह राजाओं के राजा की मां होगी, लेकिन यह कौन हो सकता है और यह कैसे हो सकता है क्योंकि तब तक उसने शादी भी नहीं की थी? यहां उसके कुवंरेपन पर जोर दिया गया है। “मरियम ने दूत से पूछा, “यह कैसे होगा,” “चूंकि मैं एक कुंवारी हूं”, या शाब्दिक रूप से, क्योंकि मैं किसी भी आदमी

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 8

को नहीं जानती (लूका १:३४)? कई रोमन कैथोलिक विद्वानों ने तर्क दिया है कि वाक्यांश कौमार्य की प्रतिज्ञा व्यक्त करता है, के प्रभाव के लिए कुछ कह रहा है, “मैं किसी भी आदमी को नहीं जानती वाक्य ने इसे हल कर दियाl” लेकिन यह देखना असंभव है कि पद का अर्थ यह कैसे हो सकता है। अपने सही दिमाग से कोई भी यहूदी लड़की कभी भी अपनी परेशान अवधि के दौरान शाश्वत कौमार्य की शपथ नहीं लेगी। कोई बच्चा नहीं है एक अपमान थाl “यह कैसे होगा,”l इस पद में निरंतर कौमार्य के सिद्धांत के लिए मरियम का मतलब बस था कि उसने अभी तक यूसुफ से शादी नहीं की थी। मरियम को जकर्याह की तरह संदेह नहीं था, वह केवल जानना चाहती थी कि चमत्कार कैसे पूरा किया जाएगा।

मरियम का एक अच्छा सवाल था। तो यह जिब्राईल के लिए विशिष्ट होने के लिए था। वह जानता था कि त्रियेकता इस चमत्कार को पूरा करेगी। तो लंबे समय तक खड़े रहकर, उसने जवाब दिया: पवित्र आत्मा तुम्हारे ऊपर आएगी, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति आप पर छाया करेगी, क्योंकि शकीनाह की महिमा जंगल में तम्बू में विश्राम करेगी। पवित्र आत्मा की छाया करने का अर्थ था कि यीशु पाप की प्रकृति के बिना पैदा हुआ था, इस प्रकार तनख़ की भविष्यवाणियों को पूरा करना था (उत्पत्ति ३:२५; यशायाह ७:१४)। रुअच-हाकोदास की छाया यूसुफ और मरियम दोनों की पाप प्रकृति को बाधित करेगी। एक आदमी और एक महिला का मिलन केवल एक बच्चे को पाप प्रकृति के साथ पैदा कर सकता है। मेशियाख़ का जन्म चमत्कारी नहीं था, क्योंकि वह किसी अन्य बच्चे की तरह पैदा हुआ था। चमत्कार गर्भधारण करने में था। इसके दो परिणाम होंगे: वह पवित्र होगा और वह ईश्वर होगा। तो जन्म लेने वाले पवित्र व्यक्ति को परमेश्वर का पुत्र कहा जाएगा (लूका १:३५)। यह वचनबद्ध अवधि के दौरान, प्रतिज्ञाओं और घर लेने के बीच था, कि यीशु के लिए मरियम का गर्भ धारण पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था।

लेकिन यहां क्या कहा जाता है, एक आम गलतफहमी उत्पन्न हुई है। यहाँ एक शिक्षा मिलती है कि कुंवारी से जन्म की आवश्यकता यह थी कि यीशु को पाप प्रकृति को विरासत में रखने का यह एकमात्र संभव तरीका था। इसका अर्थ यह है कि पाप की प्रकृति केवल पुरुष के माध्यम से फैलती हैl चूंकि प्रभु के पास एक मानव पिता नहीं था, इसलिए वह पापहीन था। लेकिन वास्तव में, बाइबिल यह नहीं सिखाती है। वास्तव में, कभी-कभी शास्त्रों ने जोर दिया कि नर पक्ष की तुलना में मादा पक्ष अधिक है। उदाहरण के लिए, भजन ५१: ५ में दाऊद ने कहा: निश्चित रूप से मैं जन्म के समय पापपूर्ण था, जब मेरी मां ने मुझे गर्भ में धारण किया था। अगर परमेश्वर चाहता, तो वह एक पापी पुरुष और पापी मादा के अंडे से एक पापहीन पुत्र पैदा कर सकता था। लेकिन अदोनाय ने पवित्र आत्मा के द्वारा की गई छाया की अवधारणा का साधन बनना चुना। फलसरूप, यीशु पवित्र होगा, यानी पापहीन होगा, और वह ईश्वर का पुत्र भी होगा, जो ईश्वर है।

वह शायद शब्दों को समझ गई, लेकिन उन्हों ने उसे केवल भ्रम में ही समझा होगा। स्वर्गदूत क्या कह रहा था, उसने तर्क दिया, ऐसा कुछ था जिसका यहूदी सदियों से इंतजार कर रहे थे; एक मसीहा, एक उद्धारकर्ता, परमेश्वर पृथ्वी आएगा क्योंकि

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 9

उसने बहुत समय पहले वादा किया था। लेकिन यह चमत्कार उसके माध्यम से होगा! उसके चारों ओर उसका मन लेना मुश्किल था।

जिब्राईल समझ सकता था कि मरियम को अधिक आश्वासन की आवश्यकता थी, इसलिए उसने कहा: यहां तक कि इलीशिबा जो तुम्हारी रिश्तेदार है, जिसे “बाँझ” कहा जाता था, उसके बुढ़ापे में एक बच्चा होने वाला है, और वह जो गर्भ धारण करने में असमर्थ थी, अब वह अपने छठे महीने में है। परमेश्वर के लिये, कुछ भी असंभव नहीं है (लूका १: ३६-३७)। अदोनाय ने सारा को भी इसी तरह से जवाब दिया था जब वह यह सुनकर हंसी थी कि वह अपने बुढ़ापे में बेटे को जन्म देगी। यहोवा ने इब्राहम से कहा: क्या ईश्वर के लिए कुछ भी मुश्किल है (उत्पत्ति Et पर मेरी टिप्पणी देखें – मैं निश्चित रूप से इसी समय पर अगले साल वापस आऊंगा और सारा तेरी पत्नी के पुत्र होगा)?

जब हाशाम ने कुछ करने का दृढ़ संकल्प किया हो, तो उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है, लेकिन जब हम उससे पूछते हैं तो वह असंभव काम करने के लिए बाध्य नहीं है। अगर उसने कुछ भी किया और हमने उससे पूछा तो हम देवता बन गए और वह हमारा नौकर बन गया। कुछ चीजें जिन्हें हम उससे पूछ सकते हैं, वे हमारे जीवन के लिए उसकी योजना के बाहर हैं। हाँ, परमेश्वर के साथ कुछ भी असंभव नहीं है, लेकिन हमारे साथ एक बड़ा सौदा असंभव है।

उसकी आंखें गंदे फर्श तक नीची हो गई होंगी। उसको मिल गया। लेकिन वह यह भी समझ गई कि जिब्राईल ने उसे उसकी पुरानी रिश्तेदार इलीशिबा के बारे में भी बताया था, जिसने उसे लंबे समय से नहीं देखा था। उसकी गर्भावस्था स्वर्गदूतों के स्वर्गीय शब्दों के आश्वासन पर सांसारिक मुहर होगी। वह, एक युवा कुंवारी, पवित्र आत्मा द्वारा आशीर्वादित की जानी थी और वह एक नर बच्चे को जन्म देगी जो परमेश्वर होगा। उसके लिए यह विश्वास करना मुश्किल था कि परमेश्वर ने उसे सभी महिलाओं में से चुना था! लेकिन उसे बचपन से ही ईलोहीम की इच्छा को स्वीकार करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए सिखाया गया था। इसलिए, उसने नम्रता से अपने आप को परमेश्वर की योजना के प्रति समर्पित कर दिया। यह वर्णन करने के लिए एक बहुत अद्भुत सम्मान था, लेकिन जैसा कि अक्सर होता है, अदोनाय के प्रति आज्ञाकारिता के लिए महान त्याग की आवश्यकता होती है।

सामान्य ज्ञान से पता चलता है कि मरियम ने इन सभी कठिनाइयों का अनुमान लगाया होगा, जिस क्षण स्वर्गदूत ने उसे बताया होगा कि वह एक बच्चे को गर्भ में धारण करेगी। उसकी खुशी और आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा होगा, जब उसे पता चला होगा कि वह एक छुटकारा देने वाले की मां होगी, इसलिए उस डरावनी घटना पर महत्वपूर्ण रूप से बदनाम हो गई जिसकी उसे प्रतीक्षा थी। फिर भी, मेशियाख़ की मां बनने के अत्यधिक विशेषाधिकार के खिलाफ लागत को जानने और वजन करने के बजाय, मरियम ने बिना शर्त के आत्मसमर्पण कर दिया होगा।

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 10

एक बच्ची मरियम ने अपने सरल विश्वास में खुद को अदोनाय को प्रस्तुत किया। वह उसके आगे के दिए गए कार्य के लिए उल्लेखनीय रूप से तैयार थीं। एक आश्चर्य चकित बात यह है कि वह कैसे परमेश्वर के वचन में इतनी डूब गई, उसकी आस्था में इतना साहस था, कि एक लड़की जिसने कभी स्वामित्व नहीं किया या यहां तक कि उसके हाथों में शास्त्रों की एक प्रति भी नहीं रखी गई थी। किसी तरह मरियम ने अपने रास्ते में किसी को खड़े होने की अनुमति नहीं दी। क्या होने वाला था, से अनजान, वह इस चुनौतीपूर्ण कार्य के लिए तैयार थीं क्योंकि वह एक छोटी बच्ची थी जो उसने मंदिर में और उसके माता-पिता और अन्य वफादार इस्राएलियों के होंठों से जो कुछ सुना, उससे अदोनाय की कठिन सच्चाई के शोषण में पड़ने के लिए तैयार थी। वह उस समय उसे नहीं जानती थी, लेकिन वह खुद को जीवन भर की लड़ाई के लिए हथियारबंद कर रही थी।

आज्ञाकारी, मरियम ने कहा : मैं अदोनाय की दासी हूँ। दासी, या दोगुना शब्द का अनुवाद अनुबंधित-गुलाम किया जा सकता है। यह शब्द किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो स्वेच्छा से दासता के लिए खुद को बेच देता है। जैसा कि उसने कहा, यह मेरे साथ हो (लूका १: ३८ ए सीजेबी)। उसने अपनी अनुबंधित-गुलामी के साथ उस कार्य को पूर्ण करने के लिए अपने आप को योग्य समझा, जो कुछ भी उसके रास्ते आया था। यहाँ तक की मौत भी। औपचारिक सगाई की अवधि के दौरान अविश्वासिता पथराव के द्वारा दंडनीय था। वह उस तथ्य से अनजान नहीं थी, और उसे पूरी तरह से पता था कि उसकी गर्भावस्था कैसी दिखती है। यद्यपि वह पूरी तरह से शुद्ध रही थी, फिर भी दुनिया को उसकी परिस्थिति को देखने के पश्चात सोचने के लिए बाध्य किया गया था। वह शायद ही कभी यीशु के जन्म की घोषणा के लिए अधिक ईश्वरीय प्रतिक्रिया दे सकती थीl यह दर्शाता है कि वह परिपक्व विश्वास की एक युवा महिला थी और जिसने सच्चे और जीवित परमेश्वर की आराधना की थी। उसके लिए परमेश्वर की योजना पर उनकी बड़ी खुशी जल्द ही बहुत स्पष्ट होने वाली थी।

जैसे ही उसने अपनी बात पूरी की, स्वर्गदूत उसकी दृष्टि से गायब हो गया (लूका १:३८ बी)। उसके दिल की धडकनें बढ़ी होंगी और उसने अपनी मां को ढूंढा होगा। उसे किसी को बताना चाहिए था! उसे परामर्श के लिए किसी से पूछना चाहिए! मरियम को अपनी मां को मनाने की ज़रूरत थी कि वह इस कहानी का आविष्कार नहीं कर रही थी! वह उत्तेजना की पीड़ा से उत्साहित हो गई होगी। लेकिन उसने अधिक सोचा, और फैसला किया होगा कि वह अपनी मां को न बताएगी। अगर दूत उसकी मां को जानना चाहता, तो वह शायद तब आता जब उसकी मां घर पर होती, ताकि वे दोनों इस संदेश को एक साथ सुन सकें (किसी ने भी कभी मरियम के माता-पिता के बारे में बात नहीं की है। यीशु को उनके पोते के रूप में रखना उन्हें कैसा लगेगा?)। लेकिन जिब्राईल ने जानबूझकर एक समय चुना था जब वह अकेली थी। इसलिए, मरियम ने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि वह यहोवा की इच्छा थी कि वह उसे गुप्त रखे। वैसे भी, अगर कोई और उस रहस्य जानता तो वह उसकी मां को बताता, और इस तरह वह जानती थी कि परमेश्वर ने उसे चुना था और इसलिए, अपने सम्मान के बारे में जानना।

Al – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी लूका
१: २६-३८ | 11

निश्चित रूप से, मरियम ने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि यूसुफ को तो बताना होगा। वह उसका इरादातन पति था। दूत को सिर्फ यूसुफ को बताना होगा। अगर वह नहीं जानता, और तब उसका गर्भ दिखना शुरू कर देता तो वह क्या सोचता। वह जानता था कि बच्चा उसका नहीं था। अरे हाँ, वह पूरी तरह से विश्वसनीय थी कि दूत यूसुफ को अवश्य बताएगा!